गांवों में जाकर जगाई अलख, पशुओं को ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन से दिलाई मुक्ति

भ्रांतियां के चलते करीब 90 फीसदी पशुपालक दूध बढाने के लिए निर्भर थे इस इजेक्शन पर

ज्योति लवानियां | धौलपुर

जिले में पशुओं में दूध ज्यादा लेने की जिद में पशुओं में बांझपन, गर्भपात होना इत्यादि बीमारियां जन्म ले रही थीं। एक सर्वे में पाया गया था कि जब दूधारु भैंस व गाय का बछड़ा (पड़ा) मर जाता है तब भैंस या गाय दूध देना बंद कर देती है। इसको दूध में लाने के लिए जिले के करीब 80-90 फीसदी पशुपालक ऑक्सीटोसीन इंजेक्शन का प्रयोग कर रहे थे। ग्रामीण क्षेत्र के पशुपालकों में इंजेक्शन को लेकर यह भ्रांतिया थीं कि आक्सीटोसीन इंजेक्शन पशुओं के लिए रामबाण है। यह बिना बछड़े व पड़े के दूध देने में मदद करता है। इस इंजेक्शन को ग्रामीण भाषा में दूध बढाने वाला, जिरकाने वाला (दोहन) या दुग्ध वाला इंजेक्शन कहा जाने लगा और इसी भ्रांति के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालक धडल्ले से इसका उपयोग पशुओं में करने में लगे हुए थे और दूधारु पशुओं को बांझ व अनुपयोगी बनाते जा रहे थे। जिससे उनको हर वर्ष लाखों रुपए की आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा था, लेकिन अब पशुपालकों में जागरुकता पैदा कर पशुओं में इस इंजेक्शन के प्रति भ्रांतियां दूर की जा चुकी हैं।

क्या है ऑक्सीटोसीन

जिले के गांव गांव में अलख जगाकर इस इंजेक्शन को लेकर जो भ्रांति थी, उसे समझाकर दूर किया और इसके नुकसान बताए। उन्हें समझाया कि यह दूध बढाने वाला न होकर मौत का इंजेक्शन है। पशुपालन वैज्ञानिक शिवमूरत मीणा ने पशुपालकों को प्रशिक्षणों के दौरान बताया कि आक्सीटोसीन प्रोस्टिरियर पिपटुटरी ग्रंथि के न्यूरो हाईप्रोफाईलिसिस से निकलने वाला एक हार्मोन है। यह हार्मोन मुख्य रुप से प्रसव के दौरान पशु की गर्भाशय पेशियों के संकुचन को बढाकर बच्चे के निकास की प्रक्रिया को सरल बनाता है। इसका दूध बढाने व दूध दोहन की प्रक्रिया से दूर दूर तक कोई सरोकार नहीं है, लेकिन धौलपुर के पशुपालकों ने इसे दूध दोहन का मुख्य साधन बना लिया था।

धौलपुर. किसान ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन भरते हुए।

विकल्प में बताई मिल्को फ्लेक्स गोली, 10 दिन बाद दूध सामान्य

अगर आपके पशु का बछडा मर जाता है तो आप दूध दोहन के लिए मिल्को फ्लेक्स गोली दूध निकालने से एक घंटा पहले दें। 10-15 दिन बाद गोली हटाकर एक कर दें। कुछ दिन बाद गोली बंद कर दे। भैंस दूध निकालना प्रारंभ कर देगी। वहीं स्वादिष्ट बांट दूध निकालने के समय खिलाएं। तथा पशु को प्यार से पीठ पर सहलाएं। भैंस बिना पड़े के लिए भी पूर्व की भांति दूध देना प्रारंभ कर देगी। इस तरह से करने से पशु को खतरनाक आक्सीटोसिन इंजेक्शन से बचाया जा सकता है। जिससे दूध पर पड़ने वाले विपरीत परिणामों से भी मुक्ति मिलती है। इसलिए पशु को इस तरह की आदत डाले जिससे पशु के साथ पशु से मिलने वाले दूध से पशुपालक को भी फायदा होगा।

इंजेक्शन का पशुओं व मानव जीवन पर घातक प्रभाव

इस इंजेक्शन के प्रयोग से दूध बनाने वाली ग्रंथिया (ग्लांडस)फट जाती हैं व पशु दूध देना बंद कर देता है। पशु शरीर में हार्मोन व खनिज तत्वों का संतुलन बिगड जाने से पाचन व अन्य शारिरिक क्रियाएं बिगडती हैं। इससे मादा पशु कभी गर्मी में समय पर नहीं आते, गर्भपात हो जाता है। बच्चा अधूरा पैदा होता है। वहीं स्थाई बांझपन भी हो जाता है। अगर पशुपालक समय रहते नहीं समझाता है तो उसे 80 हजार रुपए की दूधारु भैंस 800 रुपए में बेचनी पडेगी। वैज्ञानिक मीणा कहते हैं कि इस दूध के सेवन में इंसान में हृदय रोग, मंदबुद्धिता, नपुसंकता। महिलाओं में स्तन कैंसर, गर्भपात व बच्चेदानी में संक्रमण जैसी जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं एवं रोग प्रतिरोधक की कमी हो जाती है।

इंजेक्शन है प्रतिबंधित, उपयोग पर दो साल की कैद भी

केंद्र के विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान ग्रामीणों को इस इंजेक्शन के नुकसान समझाए गए। फिर भी कोई रोकथाम नहीं होने पर गांव गांव में जाकर चौपालों में बैठकर पशु व मानव जीवन पर इसके घातक प्रभाव समझाए। यही वजह है कि आज धौलपुर जिला आक्सीटोसीन इंजेक्शन से मुक्त है। पशुपालक परंपरागत तरीके से दूध निकालें। सरकार ने इस इजेक्शन को पशु अधिनियम 1960 की धारा 12 के तहत प्रतिबंधित किया हुआ है। इसके उपयोग करने वाले पर 1 हजार रुपए जुर्माना व दो साल की कैद या दोनों का प्रावधान है।

शिवमूरत मीणा, पशुपालन वैज्ञानिक, केवीके धौलपुर